सी बी मैकफर्सन 1911- 1987

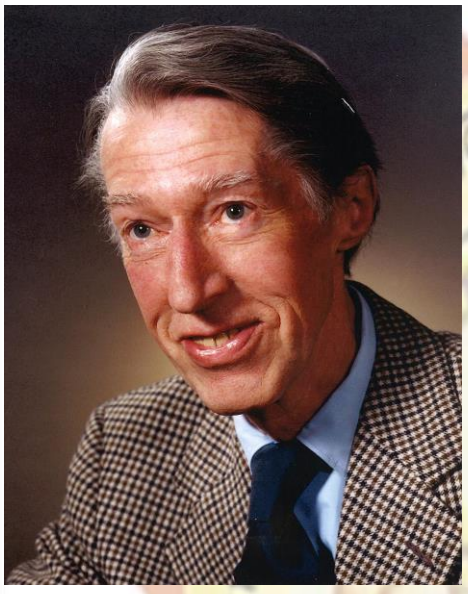

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

रचनाएं

रियल वर्ड आफ डेमोक्रेसी 1965

डेमोक्रेटिक थियरी एसेज इन रिट्राइवल 1973

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

मैक्कफरसन एक नवउदारवादी या सकारात्मक उदारवादी हैं । इनकी मान्यता है कि परंपरागत व्यक्तिवाद अपने मूल स्वरूप में मूलतः अधिकारवादी है क्योंकि यह संपत्ति के व्यक्तिगत स्वामित्व के आधार पर समाज पर व्यक्ति की श्रेष्ठता स्थापित करता है, इसे मैकफरसन ने **स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद या पसेसिव इण्डिविजुअलिज्म** की संज्ञा दी । 1973 में प्रकाशित अपनी पुस्तक में उन्होंने स्वत्व मूलक व्यक्तिवाद की अवधारणा का प्रतिपादन किया । इनकी मान्यता है कि 16-17वी शताब्दी का व्यक्तिवाद अपने मालिकाना स्वभाव के कारण आधुनिक समय में अपनी उपयोगिता खो चुका है । इसलिए वे स्वत्व मूलक व्यक्तिवाद की कठोर आलोचना करते हैं । क्योंकि परंपरागत व्यक्तिवाद इस मान्यता पर काम करता है कि जैसा कि व्यक्ति अपनी बुद्धि और शरीर पर संप्रभु है अतः अपने बुद्धि और परिश्रम से जो कुछ भी अर्जित करता है वह उसकी संपत्ति है । और वह उसका जैसे चाहे उपभोग कर सकता है । समाज का न तो इस पर कोई अधिकार है और ना ही समाज के प्रति व्यक्ति का कोई उत्तरदायित्व है । व्यक्तिवाद की इस मूल मान्यता पर ही मैंकफरसन को आपत्ति है । इसीलिए उसने इसे व्यक्तिवाद को अधिकारवादी व्यक्तिवाद या स्वत्व मूलक व्यक्तिवाद की संज्ञा दी । मैकफरसन के इस स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद इस प्र की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं हैं ।

1- व्यक्ति अपने शरीर और आत्मा प्रभु है इस कारण वह एक अधिकार वादी व्यक्तिवाद है ।

2- शरीर और मस्तिष्क पर संप्रभुता के कारण व्यक्ति द्वारा अर्जित की गई संपत्ति और उसके द्वारा किए गए समस्त कार्य पर उसका मालिकाना हक है और इसमें समाज का कोई योगदान नहीं है इसलिए समाज को इस पर अधिकार जमाने या आपत्ति करने का भी अधिकार नहीं है ।

3- व्यक्ति का कोई भी सामाजिक दायित्व समाज के प्रति बाध्यता नहीं है । क्योंकि यह व्यक्ति के स्वविवेक का निर्णय है ।

4- यह प्रतियोगी पूंजीवाद के दर्शन से उत्पन्न हुआ है । इसलिए यह पूंजीवाद को सही मानता है ।

5- लोकतंत्र और पूंजीवादी दर्शन इस स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद के प्रमौख आधार है । क्योंकि यह इस मान्यता पर ही आधारित है कि व्यक्ति को श्रम और विचार दोनों क्षेत्रों में स्वतंत्रता होनी चाहिए और उस पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए । इसलिए प्रतियोगी बाजार और प्रतियोगिता वाली राजनीतिक व्यवस्था अर्थात लोकतंत्र व्यक्तिवाद के दो अनिवार्य स्तंभ हैं ।

7 - प्रतियोगी पूंजीवाद की प्रमुख विशेषता यह भी है कि यह श्रम और पूंजी के अलगाव पर आधारित है ।

8- पूंजी के श्रम के अलगाववव के कारण शोषण मुल्क संपत्ति की अवधारणा का न केवल विकास होता है बल्कि स्थापना भी होती है । मैंकफरसन क इस पर कठोर आपत्ती है । क्योकि उनकी मान्यता है कि व्यक्तिवाद की इस अधिकार वादी प्रवृत्ति के कारण समाज में शोषण बढ़ता है और असंतोष उत्पन्न होता है इसलिए उन्होंने स्वत्व मूलक व्यक्तिवाद की कठोर आलोचना की ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

दोहनवादी स्वतंत्रता और सृजनात्मक स्वतंत्रता।

मैकफरसन ने व्यक्तिवाद की स्वतंत्रता की अवधारणा की भी आलोचना की क्योंकि इनकी मान्यता है कि व्यक्तिवाद का संपूर्ण विचार ही प्रतिबंधत रहित स्वतंत्रता पर आधारित है। किंतु पूंजीवादी व्यक्तिवाद की स्वतंत्रता सृजनात्मक स्वतंत्रता नहीं है क्योंकि व्यक्ति को इस में काम करने की स्वतंत्रता तो है लेकिन व्यक्ति का उसके उत्पाद पर अर्थात अपने श्रम से जो वह उत्पादन करता है उस पर उसका कोई अधिकार नहीं है। इसलिए पूंजीवादी स्वतंत्रता व्यक्ति की दोहन शक्ति पर आधारित है अर्थात व्यक्ति की क्षमता का दोहन यह पूंजीवादी व्यक्ति बात का मुख्य आधार है। इसलिए मैंकफरसन ने व्यक्ति के कार्य को दो श्रेणियों में रखा है।

1- दोहन शक्ति

2- विकासात्मक शक्ति।

व्यक्तिवादी पूंजीवाद का संबंध दोहन शक्ति से है जबकि व्यक्ति के व्यक्तित्व का संबंध उसकी विकासात्मक शक्ति से है। **अतः मैकफरसन के अनुसार स्वतंत्रता मूलतः सृजनात्मक स्वतंत्रता ही है**। इसके बहुआयामी रूप है और व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास तभी संभव है जब उसे सृजनात्मक स्वतंत्रता प्राप्त हो अर्थात उसे काम करने में एक अपनत्व का और शांति का अनुभव हो। व्यक्ति को न केवल काम की स्वतंत्रता हो बल्कि वह कार्य से आनंदित भी हो इससे व्यक्ति की सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है, यह तभी सम्भव है कार्य और श्रम असंशोधनीय अलगाव न हो। जबकि पूंजीवादी व्यक्तिवाद जिसे वह स्वत्व मूलक व्यक्तिवाद कहते हैं व्यक्ति की दोहन शक्ति पर आधारित है व्यक्ति के इस दोहन शक्ति के विस्तार के कारण पूंजीवाद का विस्तार होता है। पूंजीवाद का विस्तार व्यक्ति की दोहन शक्ति पर नहीं रुकता बल्कि वह प्रकृति के दोहन की तरफ बढ़ जाता है जो बीसवीं शताब्दी की एक मुख्य समस्या है।

मूल्यांकन

वास्तव मैकफरसन के चिंतन का लक्ष्य पूंजीवादी व्यक्तिवाद के दोषों को मार्क्सवादी हुए बिना और समाजवाद को स्वीकार किए बिना, दूर करना प्रतीत होता है। वे समाजवाद के साथ पूंजीवादी व्यक्तिवाद का संतुलन बिठाकर उसमें सुधार करना चाहते है। इनका स्वत्व मूलक व्यक्तिवाद पूंजीवादी व्यक्तिवाद के दोषों को उजागर करता है। और यह बताता है कि व्यक्ति की रचनात्मक स्वतंत्रता उसकी दोहन शक्ति इन सब में संतुलन होना आवश्यक है। अन्यथा सामाजिक आर्थिक साधनों पर मुट्ठी भर लोगों का अधिकार अंततः पूंजीवाद का ही नाश करेगा। इस प्रकार ये व्यक्तिवादी पूंजीवाद की समाजवादी और मार्क्सवादी आलोचनाओं से रक्षा करते है।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

गृह कार्य

1- स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद की व्याख्या कीजिए

2- स्वतंत्रता पर मैक्फर्सन के विचारो की समीक्षा कीजिए ।

संदर्भ

आन लाइन रिसोर्स

https://www.palgrave.com/gp/book/9783319949192

https://www.oxfordhandbooks.com/

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE